AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

DSSSB
प्राइमरी शिक्षक

स्पेशल एजुकेशन शिक्षक तथा नर्सरी शिक्षक के लिए भी उपयोगी

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

संपूर्ण पाठ्यक्रमानुसार

स्टडी बुक

परीक्षा के हर प्रश्न को हल करने में सक्षम !

मुख्य विशेषताएँ

- NCERT, NIOS एवं IGNOU पाठ्यपुस्तकों तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से महत्वपूर्ण थ्योरी का समावेश
- DSSSB विगत वर्षों के पेपर्स से संबंधित थ्योरी का बिंदुवार समावेश
- अध्यायवार महत्वपूर्ण प्रश्न

– प्रतीक शिवालिक

Code	Price	Pages	ISBN
CB1378	₹ 599	592	978-93-5703-407-4

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

Appendix

⊙ **Agrawal Examcart Help Centre** v

⊙ समसामयिकी (करंट अफेयर्स) vii

[अगले पृष्ठ पर दिये गये **Student's Corner** में **QR Code/Link** के माध्यम से **Free PDF** को **Download** करें]

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

1. मनोविज्ञान इतिहास [History of Psychology] 1-14
2. बाल विकास की अवधारणा, सिद्धांत, आयाम और प्रभावित करने वाले कारक [Concept of Child Development, principles, Dimension and Affecting Factors] 15-61
3. पर्यावरण और आनुवंशिकता का प्रभाव [Influence of Environment and Heredity] 62-67
4. शिक्षण और अधिगम [Teaching and Learning] 68-105
5. समाजीकरण [Socialisation] 106-112
6. भाषा और चिन्तन [Language and Thinking] 113-130
7. बुद्धि और बुद्धि परीक्षण [Intelligence and Intelligence Tests] 131-138
8. अभिप्रेरणा : सीखने में योगदान करने वाले कारक [Motivation : Factors Contributing to Learning] 139-149
9. शिक्षा और मूल्य शिक्षा का आधार [Base of Education and Value Education] 150-157
10. शिक्षण कौशल और श्रृव्य दृश्य सामग्री [Teaching Skills and Audio Visual Materials] 158-164
11. संज्ञान और संवेग [Cognition and Emotion] 165-176
12. स्मृति, सोच, विस्मृति, तर्क और रचनात्मकता [Memory, Thinking, Forgetting, Reasoning and Creativity] 177-187
13. समस्या समाधान [Problem Solving] 188-191
14. व्यक्तित्व का मापन [Measurement of Personality] 192-203
15. व्यक्तिगत विभिन्नता [Individual Difference] 204-208
16. शैक्षणिक विश्लेषण : शैक्षिक योजना, पाठ योजना, वार्षिक योजना, इकाई योजना [Pedagogical Analysis : Educational Planning, Lesson Planning, Annual Planning, Unit Planning] 209-226
17. शिक्षण विधियाँ [Teaching Methods] 227-237
18. उपलब्धि परीक्षण का निर्माण [Construction of Achievement Test] 238-245
19. शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं सूचना और संचार प्रौद्योगिकी [Educational Technology and Information and Communication Technology] 246-264
20. शिक्षा में समावेश [Inclusion in Education] 265-278
21. निर्देशन और परामर्श [Guidance and Counselling] 279-288
22. समायोजन [Adjustment] 289-294
23. शैक्षिक मूल्यांकन, आकलन और सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन [Educational Evaluation, Assessment and Continuous and Comprehensive Evaluation] 295-302

24. शिक्षा दर्शन और प्रमुख विचारक **[Education Philosophy and Major Thinkers]** **303-326**

25. विभिन्न शैक्षिक नीति और अधिकार **[Various Educational Policy and Rights]** **327-334**

26. एनसीएफ–2005, आरटीई–2009 और एनईपी–2020 **[NCF-2005, RTE-2009 and NEP-2020]** **335-350**

27. विद्यालय प्रबन्धन एवं प्रशासन, कक्षा प्रबन्धन व अनुशासन **[School Management, Adminitiation, Class Management and Disapline]** **351-364**

28. शिक्षा में सुधार व लिंग.भेद **[Reforms in Education and Gender Discrimination]** **365-372**

29. शिक्षण संस्थान **[Educational Institution]** **373-382**

30. क्रियात्मक अनुसंधान **[Action Research]** **383-387**

31. सांख्यिकी और अनुसंधान **[Statistics and Research]** **388-392**

32. बच्चों के सीखने और बच्चों की त्रुटि की वैकल्पिक अवधारणाएँ **[Alternative Concepts of Childrens Learning and Childrens Error]** **393-397**

33. सीखने की कठिनाइयों और अक्षमता वाले बच्चों की आवश्यकताओं की पहचान **[Identification of the Needs of Children with Learning Difficulties and Disability]** **398-418**

34. एक समस्या–समाधानकर्ता और एक वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में बच्चा **[Child as a Problems-Solver and AS A Scientific Investigator]** **419-424**

35. लाभान्वित और वंचित वर्गों सहित विविध पृष्ठभूमि से शिक्षार्थियों की पहचान **[Recognition of Learners from Diverse backgrounds Including Advantaged and Disadvantaged Sections]** **425-432**

36. विषयक शिक्षणशास्त्र **[Subject Pedagogy]** **433-546**

36.1 पर्यावरण शिक्षण **[Environmental Teaching]**

36.2 हिन्दी शिक्षण **[Hindi Teaching]**

36.3 गणित शिक्षण **[Mathematics Teaching]**

37. विद्यालयों में कार्य शिक्षा **[Work Education in School]** **547-582**

38. जीवन कौशल **[Life Skills]** **583-592**

अध्याय
1

मनोविज्ञान इतिहास
[History of Psychology]

1. मनोविज्ञान (Psychology)

मनोविज्ञान की परिभाषा : (Definition of Psychology)

- मनोविज्ञान संपूर्ण मानव व्यवहार का अध्ययन है। मनुष्य के भीतर होने वाली मानसिक घटनाओं का सूक्ष्म अध्ययन मनोविज्ञान के अध्ययन का आधार है। मानव व्यवहार प्राकृतिक और अर्जित दोनों है, इसलिए मनोविज्ञान के अंतर्गत इन दोनों का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाता है।
- इस प्रकार, वह पशु व्यवहार का अध्ययन भी करता है ताकि मानव व्यवहार के साथ इसकी तुलना की जा सके और अपने निष्कर्षों को अधिक सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सके। इन सभी का अध्ययन करने के लिए, उन्होंने विभिन्न अध्ययन विषयों और विधियों का विकास किया है।

मनोविज्ञान का अर्थ : (Meaning of Psychology)

- मनोविज्ञान (Psychology) शब्द दो ग्रीक शब्दों साइकी (Psyche) अर्थात आत्मा और लॉगोस (Logos) अर्थात विज्ञान अथवा एक विषय के अध्ययन से बना है। इस प्रकार, मनोविज्ञान को सर्वप्रथम 'आत्मा के विज्ञान' के रूप में परिभाषित किया गया था।

आत्मा के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान : (Psychology as the Science of Soul)

- प्राचीन काल में, प्लेटो और अरस्तू जैसे यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान की आत्मा के विज्ञान के रूप में व्याख्या की और इसका दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में अध्ययन किया।
- लेकिन आत्मा आध्यात्मिक है। इसे देखा, छुआ और महसूस नहीं किया जा सकता तथा हम आत्मा पर वैज्ञानिक प्रयोग भी नहीं कर सकते।अतः आत्मा की प्रकृति की अस्पष्टता के कारण मनोविज्ञान का यह अर्थ अस्वीकृत कर दिया गया।

मन के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान : (Psychology as the Science of the Mind)

- जर्मन दार्शनिक इमैनुएल कांट ने मनोविज्ञान को मन के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया था।
- विलियम जेम्स (1892) ने मनोविज्ञान को मानसिक प्रक्रियाओं के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया। लेकिन 'मन' शब्द भी काफी अस्पष्ट है क्योंकि आत्मा की भाँति मन का भी कोई भौतिक स्वरुप नहीं है तथा जिस वस्तु या बात का कोई भौतिक स्वरूप नहीं, उसे ठीक–ठीक परिभाषित करना भी सम्भव नहीं। अतः मन को मनोविज्ञान की अवधारणा मानने से इंकार किया जाने लगा तथा अन्य सर्वमान्य परिभाषा की तलाश की जाने लगी ।

चेतना के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान : (Psychology as the Science of Consciousness)

- आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को ''चेतना का विज्ञान'' के रूप में परिभाषित किया है। जेम्स सुली (1884) ने मनोविज्ञान को ''आंतरिक जगत का विज्ञान'' के रूप में परिभाषित किया।
- विल्हेम वुंड्ट (1892) ने मनोविज्ञान को एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जो ''आंतरिक अनुभवों'' का अध्ययन करती है। किन्तु चेतना के तीन स्तर – चेतन, अचेतन ओर अवचेतन होने के कारण यह परिभाषा भी कुछ लोगों ने स्वीकार नहीं की।

व्यवहार के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान : (Psychology as the Science of Behaviour)

- 20वीं शताब्दी की शुरुआत में, जब मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को एक शुद्ध विज्ञान के रूप में विकसित करने का प्रयास किया, तो इसे व्यवहार के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जाने लगा।
- व्यवहार शब्द जे.बी. वाटसन द्वारा लोकप्रिय किया गया था। जबकि इसके अन्य प्रतिपादक विलियम मैकडुगल और डब्ल्यू.बी. पिल्सबरी हैं।
- वुडवर्थ 20वीं सदी के 88वें सबसे अधिक उदधृत मनोवैज्ञानिक थे। उन्होंने कहा ''पहले मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा खो दी, फिर इसका दिमाग, फिर इसने अपनी चेतना खो दी, इसमें अभी भी तरह का व्यवहार है।'' ।

मनोविज्ञान के प्रमुख पहलू: (Key aspects of psychology)

- यह एक वैज्ञानिक जाँच है। इसका अर्थ प्रयोग, संख्याएँ , डेटा तथा नमूनाकरण है। मनोवैज्ञानिक विवरण, भविष्यवाणी, तार्किक आलोचना तथा व्यवस्थित अवलोकन आदि से परे एक साक्ष्य आधारित साधनों का कठोर उपयोग है।
- मनोविज्ञान सभी प्रकार के लोगों और सामाजिक समूहों को देखता है, जिसमें जानवर भी शामिल हैं।
- यह मन और व्यवहार का अध्ययन है। अतः इसमें सब कुछ शामिल है।
- मनोविज्ञान से जुड़े कुछ सामान्य अर्थ निम्न हैं:–
  - मन और व्यवहार का विज्ञान।
  - किसी व्यक्ति या समूह की मानसिक या व्यवहार संबंधी विशेषताएं।

- ज्ञान या गतिविधि के किसी विशेष क्षेत्र के संबंध में मन और व्यवहार का अध्ययन।
- मनोविज्ञान इस बात की वैज्ञानिक जाँच है कि लोग कैसे व्यवहार करते हैं, सोचते हैं और महसूस करते हैं। इसमें अंतर्निहित वह तंत्र शामिल हैं जिसमें पर्यावरण, जीव विज्ञान और मन आदि शामिल हैं। मनोवैज्ञानिक जांच लोगों की मदद करने वाले कार्रवाई योग्य परिणामों का वर्णन, भविष्यवाणी, विश्लेषण और निर्माण करने का प्रयास करती है। कार्रवाई योग्य परिणामों में चिकित्सा, शिक्षणशैली ,कार्यस्थल पर नवाचार आदि शामिल हैं।
- आज, मनोविज्ञान संज्ञानात्मक विज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, अर्थशास्त्र, कानून और सार्वजनिक स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों से निकटता से जुड़ा हुआ है।

मनोविज्ञान की कुछ अन्य परिभाषाएँ इस प्रकार हैं: –

- **प्लेटो के अनुसार,** ''मनोविज्ञान मानस या आत्मा का विज्ञान है''।
- **वुडवर्थ के अनुसार,** ''मनोविज्ञान, वातावरण के सम्पर्क में होने वाले मानव व्यवहारों का विज्ञान है।,''
- **जेबी वाटसन के अनुसार** ''मनोविज्ञान, व्यवहार का निश्चित या शुद्ध विज्ञान है।''।
- **स्किनर के अनुसार,** ''मनोविज्ञान व्यवहार और अनुभव का विज्ञान है''।
- **क्रो ओर क्रो के अनुसार,** ''मनोविज्ञान मानव व्यवहार और मानव संबंधों का अध्ययन है।

2. मनोविज्ञान का दायरा (क्षेत्र) (Scope of psychology)

- मनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। यह जीवित जीवों के व्यवहार का अध्ययन, वर्णन और व्याख्या करता है।
- 'व्यवहार' शब्द का अत्यधिक व्यापक और विस्तृत अर्थ है।
- व्यवहार में सभी प्रकार की जीवन गतिविधियाँ और जीवित जीवों के अनुभव जैसे क्रियात्मक, संज्ञानात्मक या भावात्मकय अन्तर्निहित या स्पष्ट, चेतन अवचेतन या अचेतन आदि शामिल हैंद्य हालांकि जीव और उनकी जीवन गतिविधियाँ अनगिनत और असीमित हैं, इसलिए मनोविज्ञान के दायरे पर कोई सीमा नहीं लगाई जा सकती है।
- हालाँकि, सुविधा और उचित अध्ययन के लिए, इसे नीचे दी गई चर्चा के अनुसार शाखाओं और क्षेत्रों की संख्या में विभाजित किया जा सकता है: –

- **सामान्य मनोविज्ञान : General psychology**

  मनोविज्ञान की यह शाखा सामान्य वयस्क मनुष्यों के व्यवहार के संबंध में मौलिक नियमों, और सिद्धांतों से संबंधित है।

- **असामान्य मनोविज्ञान : Abnormal psychology**

  यह मनोविज्ञान की वह शाखा है जो असामान्य लोगों के व्यवहार का उनके अपने वातावरण के संबंध में वर्णन और व्याख्या करती है। व्यवहार की असामान्यताओं के कारण, लक्षण व सिंड्रोम, विवरण और उपचार का अध्ययन इस शाखा की विषय वस्तु हैं।

- **सामाजिक मनोविज्ञान : Social psychology**

  यह शाखा मानव व्यवहार का उसके सामाजिक परिवेश के संबंध में अध्ययन करती है।

  इस शाखा के अंतर्गत समूह के सदस्य के रूप में व्यक्ति के व्यवहार, संचार की प्रक्रिया और पारस्परिक संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

- **प्रयोगात्मक मनोविज्ञान : Exprimental Psychology**

  इसमें मनोविज्ञान के प्रयोगों द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति की मनोदशा और व्यवहार का अध्ययन करके मनोवैज्ञानिक नियम एवं निष्कर्ष निकाले जाते हैं अथवा मनोवैज्ञानिक सैद्धान्तिक पक्ष की पुष्टि की जाती है।

- **पशु मनोविज्ञान : Animal psychology**

  पशु मनोविज्ञान वह शाखा है जिसमें पशुओं के व्यवहार का अध्ययन नियन्त्रित परिस्थितियों में किया जाता है।। विभिन्न प्रकार के प्रयोगों और अवलोकनों के माध्यम से जानवरों के व्यवहार पैटर्न का अध्ययन इस शाखा की प्रमुख विषय वस्तु है। ऐसे अध्ययन तुलनात्मक और अनुमानात्मक प्रकृति के होते हैं। इन अध्ययनों के परिणामों को मानव के व्यवहार, समायोजन और विकास की समस्याओं से निपटने में सामान्यीकृत किया जा सकता है।

- **औद्योगिक मनोविज्ञान : Industrial psychology**

  यह मनोविज्ञान की वह शाखा है जो औद्योगिक जगत में प्रचलित परिस्थितियों और वातावरण के संबंध में मानव व्यवहार का अध्ययन करती है। इसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधनों के कार्यकारी उत्पादन में सुधार लाना है। मनोविज्ञान की यह शाखा उपभोक्ताओं के व्यवहार को उनकी अपनी परिस्थितियों तथा वस्तुओं के उपभोग सम्बन्धी वातावरण के सन्दर्भ में अध्ययन करती है।

3. मनोविज्ञान की प्रकृति और कार्य (Nature And Functions of Psychology)

निम्नलिखित तालिका मनोविज्ञान की समग्र प्रकृति और कार्यों को स्पष्ट करती है: –

क्र.सं.	मनोविज्ञान की शाखाएँ	मनोविज्ञान की प्रकृति और कार्य
1.	नैदानिक मनोविज्ञान	मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों और अवसाद और सिजोफ्रेनिया जैसे विकारों का अध्ययन, मूल्यांकन, रोकथाम और उपचार

क्र.सं.	मनोविज्ञान की शाखाएँ	मनोविज्ञान की प्रकृति और कार्य
2.	संगठनात्मक और औद्योगिक मनोविज्ञान	रोजगार, मूल्यांकन और नियुक्ति , कार्यस्थल की भलाई, द्वन्द्व समाधान, समूह निर्माण, आदि के संबंध में अनुभव वातावरण कैसे कार्य करता है, इसका अध्ययन।
3.	सामाजिक मनोविज्ञान	लोग सामाजिक संदर्भो में कैसे अंतःक्रिया करते हैं और कौन से चर सामाजिक व्यवहार, पहचान और अनुभूति को प्रभावित करते हैं, इसका अध्ययनद्य
4.	संज्ञानात्मक मनोविज्ञान	मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन जो सोच, भावना, भाषा, कला आदि को सक्षम बनाता है।
5.	व्यवहार मनोविज्ञान	मानव और पशु व्यवहार का अध्ययन
6.	विकासात्मक मनोविज्ञान	एक निश्चित आयु समूह या विकासात्मक अवस्था से संबंधित विशिष्ट कारकों का अध्ययन जीवन भर के रुझानों में होता है
7.	विकासवादी मनोविज्ञान	विकासवादी संदर्भ में मानव और पशु व्यवहार का अध्ययन और अनुकूलन क्षमता व गहराई से निहित प्रवृत्तियों का अध्ययन
8.	विधि चिकित्सा शास्त्र संबंधी मनोविज्ञान	अपराधी कैसे व्यवहार करते हैं और सोचते हैं इसका अध्ययन
9.	तंत्रिका मनोविज्ञान	एक नैदानिक व्यवस्था में मस्तिष्क के कार्यान्वयन का आकलन
10.	सकारात्मक मनोविज्ञान	एक सकारात्मक व अच्छा जीवन जीने का अध्ययन
11.	तंत्रिका विज्ञान	एक जैविक इकाई के रूप में मस्तिष्क का अध्ययन और इसकी विशिष्टताएँ जो प्रत्यक्ष रूप से हो भी सकती हैं और नहीं भी
12.	व्यवहार से संबंधित, विचार, या भावनाएँ	इसमें यह समझना शामिल है कि न्यूरश्वन्स कैसे संचार और कार्य करते हैं।
13.	खेल मनोविज्ञान	खिलाड़ियों का अध्ययन, प्रशिक्षण और मुकाबला
14.	विद्यालय मनोविज्ञान	विद्यालय के संदर्भ में विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक चरों का अध्ययन
15.	साइबर मनोविज्ञान	इंटरनेट आधारित व्यवहार पर ध्यान देने के साथ मानव व्यवहार का अध्ययन

4. मनोविज्ञान में विचार के संप्रदाय (Schools of Thought In Psychology)

- मनोविज्ञान के विभिन्न संप्रदाय मनोविज्ञान के प्रमुख सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- विचार के पहले संप्रदाय, संरचनावाद, की वकालत पहली मनोविज्ञान प्रयोगशाला के संस्थापक विल्हेम वुंड्ट ने की थी।
- प्रारंभिक समय में, मनोवैज्ञानिकों ने अक्सर स्वयं को विशेष रूप से एक ही विचार के संप्रदाय के साथ पहचाना। आज, अधिकांश मनोवैज्ञानिकों का मनोविज्ञान पर एक उदार दृष्टिकोण है।
- मनोविज्ञान के हमारे ज्ञान और समझ को प्रभावित करने वाले विचार के कुछ प्रमुख संप्रदाय निम्नलिखित हैंः –

संरचनावाद संप्रदाय : Structuralism school

- वुंड्ट सचेत अनुभव के अध्ययन में रुचि रखते थे और मन के घटकों या निर्माण खंडों का विश्लेषण करना चाहते थे।
- वुंड्ट के समय के मनोवैज्ञानिकों ने आत्मनिरीक्षण के माध्यम से मन की संरचना का विश्लेषण किया और इसलिए उन्हें संरचनावादी कहा गया।
- आत्मनिरीक्षण एक ऐसी प्रक्रिया थी जिसमें व्यक्तियों या विषयों को मनोवैज्ञानिक प्रयोगों में विस्तार से अपनी स्वयं की मानसिक प्रक्रियाओं या अनुभवों का वर्णन करने के लिए कहा गया था।
- हालांकि, एक विधि के रूप में आत्मनिरीक्षण कई अन्य मनोवैज्ञानिकों को संतुष्ट नहीं कर पाया। इसे कम वैज्ञानिक विधि माना गया क्योंकि आत्मनिरीक्षण रिपोर्ट को बाहरी पर्यवेक्षकों द्वारा सत्यापित नहीं किया जा सकता था।
- इससे मनोविज्ञान में नए दृष्टिकोण का विकास हुआ।

सारः Summary

- संरचनावाद को आमतौर पर मनोविज्ञान में विचार का पहला संप्रदाय माना जाता है। यह दृष्टिकोण मानसिक प्रक्रियाओं को सबसे बुनियादी घटकों में तोड़ने पर केंद्रित था।
- संरचनावाद से जुड़े प्रमुख विचारकों में विल्हेम वुंड्ट और एडवर्ड टचीनर शामिल हैं। संरचनावाद का ध्यान मानसिक प्रक्रियाओं को उनके सबसे बुनियादी तत्वों में कम करने पर था।
- विल्हेम वुंड्ट को वर्ष 1879 में लीपजिग (जर्मनी) में पहली मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए जाना जाता है। यह वुंड्ट द्वारा सुगम वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संदर्भ में सबसे बड़ी उन्नति थी।

- वुंड्ट ने मनोविज्ञान को चेतना के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने आगे तर्क दिया कि यदि चेतना वास्तव में मौजूद है, तो इसकी एक संरचना होनी चाहिए। अपने दृष्टिकोण को और विस्तृत करने के लिए, उन्होंने चेतना की संरचना की व्याख्या की। उनके अनुसार चेतना का अध्ययन तीन बातों से किया जा सकता है:–
  - **प्रयोग:**
    - प्रयोग वैज्ञानिक जाँच का सबसे महत्वपूर्ण तरीका था जो वुंड्ट के अनुसार मनोविज्ञान के विकास के लिए समय की आवश्यकता थी। इसलिए मनोवैज्ञानिकों को प्रयोग करने की आवश्यकता थी जिससे चेतना की वास्तविक प्रकृति का पता चले ।
    - इस संबंध में, पावलोव अपने कुत्तों पर सीखने की प्रक्रिया की खोज के प्रयोगों के लिए जाने जाते हैं।
  - **आत्मनिरीक्षण:**
    - यद्यपि वुंड्ट का मानना था कि मनोवैज्ञानिकों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, उन्होंने आत्मनिरीक्षण को ज्ञान प्राप्त करने की एक विधि के रूप में अस्वीकार नहीं किया, क्योंकि उन्होंने आत्मनिरीक्षण को चेतना की संरचना को देखने और समझने के साधन के रूप में माना।
  - मनुष्य के पिछले इतिहास को देखते हुए जिसने उसकी चेतना को आकार दिया है:
    - चेतना की संरचना का अध्ययन करने का एक अन्य तरीका मनुष्य के पिछले इतिहास को देखना भी है।
    - डार्विन प्रकृति बनाम पोषण विवाद को जन्म देने वाले पहले व्यक्ति थे। उनके अनुसार, पर्यावरण ने मनुष्य की सोच को आकार दिया, तथा उसका पालन–पोषण किया ।
    - वुंड्ट के अनुसार, व्यक्तियों के अतीत को देखने से व्यक्तियों की चेतना के बारे में जानकारी मिली।वुंड्ट ने स्वयं भी कुछ प्रयोग किए और उनके आधार पर उन्होंने प्रतिपादित किया कि चेतना एक प्रक्रिया है जिसमें तीन भाग होते हैं:
      - विचार
      - भावनाएँ
      - मनोभाव
    - फिर उन्होंने मतिभ्रम, कृत्रिम निद्रावस्था की स्थिति और सपनों को विस्तृत किया। उनके अनुसार, चेतना की ये सभी असामान्य गतिविधियाँ ध्यान के टूटने के कारण होती हैं। चेतना के विभिन्न भागों के उनके विस्तार के कारण, उन्हें आज एक संरचनावादी के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
    - संरचनावादियों ने मानव मन की आंतरिक प्रक्रियाओं का विश्लेषण करने के लिए आत्मनिरीक्षण जैसी तकनीकों का उपयोग किया।

एडवर्ड ब्रैडफोर्ड टिचनर Edward Bradford Titchner

- एडवर्ड ब्रैडफोर्ड टिचनर का जन्म 1867 में हुआ था और 1927 में उनकी मृत्यु हो गई थी। ये वुंड्ट के शिष्य थे।
- उन्होंने जर्मनी में अध्ययन किया, और अपना सारा जीवन अमेरिका में काम किया।
- टिचनर ने समझाया कि चेतना वास्तव में किससे बनी है। इसके बाद उन्होंने चेतना की सामग्री को विस्तार किया।
- टिचनर का दूसरा योगदान यह है कि उन्होंने चेतना की सामग्री के संयोजन का वर्णन किया, जिसका अर्थ है कि, कौन सी सामग्री एक गतिविधि में परिणाम के लिए एक साथ संयोजित होती है।
- टिचनर का तीसरा योगदान यह है कि उन्होंने चेतना की सामग्री के बीच संबंध की व्याख्या की, जिसका अर्थ है कि चेतना सामग्री के एक दूसरे से संबंधित होने और एक साथ काम करने का उत्पाद है।
- मनोविज्ञान की विषय वस्तु के संदर्भ में वुंड्ट के विपरीत (जिन्होंने चेतना का अध्ययन करने के लिए तीन तरीके दिए), ट्रिचनर ने तर्क दिया कि मनोविज्ञान का अध्ययन करने का एकमात्र तरीका आत्मनिरीक्षण था। जिसे ट्रिचनर ने व्यवस्थित और नियंत्रित आत्म अवलोकन के रूप में परिभाषित किया।

चेतना के तत्व Elements of Consciousness

ट्रिचनर ने चेतना की तीन प्रारंभिक अवस्थाओं का प्रस्ताव दिया:

- **संवेदनाएँ:** धारणा के मूल तत्व – दृश्य, ध्वनियाँ, स्वाद, गंध आदि। पर्यावरण में भौतिक वस्तुओं द्वारा उद्घाटित।
- **प्रतिमाध्छवियाँ:** विचारों के तत्व–यह उन अनुभवों को दर्शाता है जो वास्तव में उस समय मौजूद नहीं थे, उदा–एक दृष्टि की स्मृति।
- **अनुराग/स्नेह:** भावनाएँ – भावना के तत्वः प्रेम, घृणा, क्रोध, उदासी आदि।

संरचनावाद की आलोचना व पतन Criticisms and the Decline of Structuralism

- समय के साथ आत्मनिरीक्षण का उनका दृष्टिकोण अधिक कठोर और सीमित हो गया।
- आज के वैज्ञानिक मानकों के अनुसार, मन की संरचनाओं का अध्ययन करने के लिए प्रयोग की जाने वाली प्रायोगिक विधियाँ बहुत व्यक्तिपरक थीं।
- आत्मनिरीक्षण के उपयोग से परिणामों में विश्वसनीयता की कमी हुई।
- अन्य आलोचकों का तर्क है कि संरचनावाद का आंतरिक व्यवहार से घनिष्ट संबंध था, जो प्रत्यक्ष रूप से देखने योग्य नहीं है और जिसे सटीक रूप से मापा नहीं जा सकता है।क्योंकि आत्मनिरीक्षण स्वयं एक सचेत प्रक्रिया है।
- आत्मनिरीक्षण को उस चेतना में हस्तक्षेप करना चाहिए जिसका व्यक्ति निरीक्षण करना चाहता है।

- अंततः टिचनर की मृत्यु के बाद आत्मनिरीक्षण का विचार विलुप्त हो गया।

प्रकार्यवाद या कार्यवाद संप्रदाय : Functionalism school

- एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक, विलियम जेम्स, जिन्होंने लीपजिग में मनोविज्ञान की प्रयोगशाला की स्थापना के तुरंत बाद कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स में एक मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की थी उन्होंने मानव मन के अध्ययन के लिए एक कार्यात्मक दृष्टिकोण को विकसित किया।
- विलियम जेम्स का मानना था कि मन की संरचना पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय मनोविज्ञान को यह अध्ययन करना चाहिए कि मन क्या करता है और लोगों को अपने पर्यावरण से निपटने के लिए कैसे व्यवहार करना चाहिए ।
- उदाहरण के लिए, प्रकार्यवादियों ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि कैसे व्यवहार लोगों को उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाता है।
- विलियम जेम्स के अनुसार, पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया करने वाली मानसिक प्रक्रियाओं की एक सतत धारा के रूप में चेतना ने मनोविज्ञान का मूल गठन किया।
- उस समय के एक बहुत ही प्रभावशाली शैक्षिक विचारक, जॉन डीवी ने प्रकार्यवाद का उपयोग यह तर्क देने के लिए किया कि मनुष्य अपने पर्यावरण के अनुकूल होकर प्रभावी ढंग से कार्य करना चाहता है।

सार Summary

- यह विचार के संरचनावादी संप्रदाय के सिद्धांतों की प्रतिक्रिया के रूप में गठित और विलियम जेम्स के काम से काफी प्रभावित था।
- स्वयं मानसिक प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, प्रकार्यवादी विचारक इन प्रक्रियाओं द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका में रुचि रखते थे।

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान Gestalt Psychology

- इसने अवधारणात्मक अनुभवों के संगठन पर ध्यान केंद्रित किया।
- मन के घटकों को देखने के बजाय, गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने तर्क दिया कि जब हम दुनिया को देखते हैं तो हमारा अवधारणात्मक अनुभव धारणा के घटकों के योग से अधिक होता है।
- दूसरे शब्दों में, हम जो अनुभव करते हैं वह हमारे पर्यावरण से प्राप्त आदानों से कहीं अधिक होता है। उदाहरण के लिए, जब चमकती बल्बों की एक श्रृंखला से प्रकाश हमारे रेटिना पर पड़ता है, तो हम वास्तव में प्रकाश की गति का अनुभव करते हैं।
- जब हम एक फिल्म देखते हैं, तो हमारे पास वास्तव में हमारे रेटिना पर गिरने वाली स्थिर तस्वीरों की तेजी से चलती छवियों की एक श्रृंखला होती है।
- इस प्रकार, हमारा अवधारणात्मक अनुभव तत्वों से अधिक है। अनुभव समग्र है। यह एक गेस्टाल्ट है।

सार Summary

- गेस्टाल्ट मनोविज्ञान, मनोविज्ञान का एक ऐसा संप्रदाय है जो इस विचार पर आधारित है कि हम चीजों को एक एकीकृत संपूर्ण के रूप में अनुभव करते हैं। संरचनावाद के सूक्षतम दृष्टिकोण के जवाब में 19वीं शताब्दी के अंत में जर्मनी और ऑस्ट्रिया में मनोविज्ञान के लिए यह दृष्टिकोण शुरू हुआ।
- गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों का मानना था कि विचारों और व्यवहार को उनके सबसे छोटे तत्वों में विभाजित करने के बजाय, आपको पूरे अनुभव को देखना चाहिए।
- गेस्टाल्ट विचारकों के अनुसार, संपूर्ण अपने भागों के योग से बड़ा है।

व्यवहारवाद संप्रदाय Behaviorism school

- 1910 के आसपास, जॉन वाटसन ने मनोविज्ञान के विषय के रूप में मन और चेतना के विचारों को खारिज कर दिया।
- वे शास्त्रीय कंडीशनिंग पर इवान पावलोव जैसे शरीर विज्ञानियों के काम से बहुत प्रभावित थे।
- वाटसन के लिए, मन देखने योग्य नहीं है और आत्मनिरीक्षण व्यक्तिपरक है क्योंकि इसे किसी अन्य पर्यवेक्षक द्वारा सत्यापित नहीं किया जा सकता है।
- उनके अनुसार, वैज्ञानिक मनोविज्ञान को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि क्या देखा जा सकता है और क्या सत्यापित किया जा सकता है।
- उन्होंने मनोविज्ञान को व्यवहार या प्रतिक्रियाओं (उत्तेजनाओं के लिए) के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया, जिसका निष्पक्ष रूप से अध्ययन किया जा सकता है।
- वाटसन के व्यवहारवाद को कई प्रभावशाली मनोवैज्ञानिकों द्वारा विकसित किया गया था, जिन्हें व्यवहारवादियों के रूप में जाना जाता है।
- उनमें से सबसे प्रमुख स्किनर थे जिन्होंने व्यवहारवाद को व्यापक परिस्थितियों में लागू किया और इस दृष्टिकोण को लोकप्रिय बनाया।

सार Summary

- 1950 के दशक के दौरान व्यवहारवाद विचार का एक प्रमुख संप्रदाय बन गया। यह निम्न विचारकों के कार्यों पर आधारित था जैसेः–
  - जॉन बी वाटसन
  - इवान पावलोव –
  - बी एफ स्किनर
- व्यवहारवाद बताता है कि सभी व्यवहारों को आंतरिक शक्तियों के बजाय पर्यावरणीय कारणों से समझाया जा सकता है।
- व्यवहारवाद अवलोकनीय व्यवहार पर केंद्रित है। शास्त्रीय कंडीशनिंग और ऑपरेंट कंडीशनिंग सहित सीखने के बहुत सारे सिद्धांत शोध का केंद्र थे।
- मनोविज्ञान के व्यवहारिक संप्रदाय का मनोविज्ञान के पाठ्यक्रम पर बड़ा प्रभाव था और इस विचार के संप्रदाय से उभरे कई विचार और तकनीकें आज भी व्यापक रूप से उपयोग किये जाते हैं।

- मनोचिकित्सा और व्यवहार संशोधन कार्यक्रमों में व्यवहारिक प्रशिक्षण, प्रतीक अर्थव्यवस्था, अवतरण चिकित्सा और अन्य तकनीकों का अक्सर उपयोग किया जाता है।

मनोविश्लेषण Psychoanalysis

- मनोविश्लेषण के जनक फ्रायड ने मानव व्यवहार को अचेतन इच्छाओं और संघर्षों की गतिशील अभिव्यक्ति के रूप में देखा।
- उन्होंने मनोविश्लेषण को मनोवैज्ञानिक विकारों को समझने और दूर करने के लिए एक प्रणाली के रूप में स्थापित किया।
- जबकि फ्रायडियन मनोविश्लेषण ने मनुष्य को आनंद चाहने अर्थात संभवतः यौन इच्छाओं की संतुष्टि के लिए अचेतन इच्छा से प्रेरित होने के रूप में देखा।

सार Summary

- मनोविश्लेषण सिगमंड फ्रायड द्वारा स्थापित मनोविज्ञान का एक संप्रदाय है। इस विचारधारा ने व्यवहार पर अचेतन मन के प्रभाव पर जोर दिया।
- फ्रायड का मानना था कि मानव मन तीन तत्वों से बना हैः इदम (id), अहम् (Ego), पराहम (Super-Ego)।
- इदम मौलिक आग्रहों से बना है, जबकि अहम वास्तविकता से निपटने के लिए आरोपित व्यक्तित्व का घटक है। इसी प्रकार पराहम व्यक्तित्व का वह हिस्सा है जो उन सभी आदर्शों और मूल्यों को धारण करता है जिन्हें हम अपने माता–पिता और संस्कृति से आत्मसात करते हैं।
- फ्रायड के विचार का संप्रदाय अत्यधिक प्रभावशाली था, लेकिन इसने बहुत अधिक विवाद भी उत्पन्न किया। यह विवाद न केवल उनके समय में, बल्कि फ्रायड के सिद्धांतों की आधुनिक चर्चाओं में भी मौजूद था।

मानवतावादी मनोविज्ञान Humanistic Psychology

- मानव प्रकृति का एक अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण है । कार्ल रोजर्स और अब्राहम मास्लो जैसे मानवतावादियों ने मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा और उनकी आंतरिक क्षमता को विकसित करने और प्रकट करने के उनके प्राकृतिक प्रयास पर जोर दिया। उन्होंने तर्क दिया कि व्यवहारवाद पर्यावरण की स्थितियों द्वारा निर्धारित व्यवहार पर अपने जोर के साथ मानव स्वतंत्रता और गरिमा को कम करता है और मानव प्रकृति के बारे में एक यंत्रवत दृष्टिकोण निर्धारित करता है।

सार Summary

- मानवतावादी मनोविज्ञान मनोविश्लेषण और व्यवहारवाद की प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुआ।
- मानवतावादी मनोविज्ञान ने व्यक्तिगत स्वतंत्र इच्छा, व्यक्तिगत विकास और आत्म–बोध की अवधारणा पर भी ध्यान केंद्रित किया।
- जबकि विचार के शुरुआती संप्रदाय काफी हद तक असामान्य मानव व्यवहार पर केंद्रित थे, मानवतावादी मनोविज्ञान लोगों को उनकी क्षमता को प्राप्त करने और पूरा करने में मदद करने पर जोर देने में काफी भिन्न था।
- प्रमुख मानवतावादी विचारकों में निम्न शामिल हैंः–
  - अब्राहम मेस्लो
  - कार्ल रोजर्स।

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान Cognitive Psychology

- इसमें सोचना, समझना, महसूस करना, याद रखना, समस्या सुलझाना और कई अन्य मानसिक प्रक्रियाएँ शामिल हैं जिनके द्वारा दुनिया के बारे में हमारा ज्ञान विकसित होता है, जिससे हम विशिष्ट तरीकों से पर्यावरण से निपटने में सक्षम होते हैं।
- कुछ संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक मानव मन को कंप्यूटर की तरह सूचना प्रसंस्करण प्रणाली के रूप में देखते हैं।
- इस दृष्टिकोण के अनुसार मन, एक कंप्यूटर की तरह है जो सूचना प्राप्त करता है, संसाधित करता है, रूपांतरित करता है, संग्रहीत करता है तथा पुनः प्राप्त करता है।
- आधुनिक संज्ञानात्मक मनोविज्ञान मनुष्य को भौतिक और सामाजिक दुनिया में अपने अन्वेषण के माध्यम से सक्रिय रूप से अपने मस्तिष्क का निर्माण करने के रूप में देखता है। इस दृष्टिकोण को कभी–कभी रचनावाद भी कहा जाता है।
- बाल विकास के बारे में पियाजे का दृष्टिकोण जिस पर बाद में चर्चा की जाएगी, उसे मस्तिष्क के विकास का रचनावादी सिद्धांत माना जाता है।
- एक अन्य रूसी मनोवैज्ञानिक वाइगोत्स्की ने भी यह सुझाव दिया कि मानव मन सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से विकसित होता है जिसमें मस्तिष्क को वयस्कों और बच्चों के बीच संयुक्त अंतःक्रिया के माध्यम से सांस्कृतिक रूप से निर्मित माना जाता है।
- पियाजे के लिए बच्चे सक्रिय रूप से अपने मन का निर्माण करते हैं, वहीँ दूसरे शब्दों में, वायगोत्स्की ने यह विचार रखा कि मन एक संयुक्त सांस्कृतिक निर्माण है और बच्चों और वयस्कों के बीच अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप उभरता है।

सार Summary

- संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान का वह संप्रदाय है जो मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। जिसमें यह भी शामिल है कि लोग कैसे सोचते हैं, अनुभव करते हैं, याद करते हैं और सीखते हैं।
- आंशिक रूप से व्यवहारवाद की प्रतिक्रिया के रूप में, 1950 के दशक के दौरान संज्ञानात्मक मनोविज्ञान उभरना शुरू हुआ।
- इस विचारधारा के सबसे प्रभावशाली सिद्धांतों में से एक जीन पियाजे द्वारा प्रस्तावित संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत के चरण थे।

5. भारत में मनोविज्ञान का विकास (Development of Psychology In India)

- भारतीय दार्शनिक परंपरा मानव चेतना,आत्मा, मन–शरीर संबंधों, और विभिन्न प्रकार के मानसिक कार्यों जैसे अनुभूति, धारणा, भ्रम, ध्यान और तर्क आदि पर मानसिक प्रक्रियाओं और प्रतिबिंबों पर अपना ध्यान केंद्रित करने में समृद्ध है।

- भारत में इस विषय के विकास पर अभी भी पाश्चात्य मनोविज्ञान का प्रभुत्व बना हुआ है, हालांकि देश और विदेश दोनों में प्रस्थान बिंदुओं को खोजने के लिए कुछ प्रयास किए गए हैं।
- इन प्रयासों ने वैज्ञानिक अध्ययनों के माध्यम से भारतीय दार्शनिक परंपराओं में विभिन्न कथनों के सत्य मूल्य को स्थापित करने का प्रयास किया है।
- भारतीय मनोविज्ञान के आधुनिक युग की शुरुआत कलकत्ता विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में हुई जहाँ प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का पहला पाठ्यक्रम शुरू किया गया और 1915 में पहली मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित की गई।
- कलकत्ता विश्वविद्यालय ने 1916 में मनोविज्ञान का पहला विभाग और 1938 में व्यावहारिक मनोविज्ञान का दूसरा विभाग शुरू किया।
- कलकत्ता विश्वविद्यालय में आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान की शुरुआत भारतीय मनोवैज्ञानिक डॉ. एन.एन. सेनगुप्ता ने की जिन्हें वुंड्ट की प्रायोगिक परंपरा में संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रशिक्षित किया गया था।
- प्रोफेसर जी. बोस फ्रायडियन मनोविश्लेषण में प्रशिक्षित थे,जो एक दूसरा क्षेत्र था जिसने भारत में मनोविज्ञान के प्रारंभिक विकास को प्रभावित किया। प्रोफेसर बोस ने 1922 में इंडियन साइकोएनालिटिकल एसोसिएशन की स्थापना की।
- मैसूर और पटना विश्वविद्यालयों में मनोविज्ञान विभाग मनोविज्ञान में शिक्षण और अनुसंधान के अन्य प्रारंभिक केंद्र थे। इन प्रारंभिक शुरुआतों से, आधुनिक मनोविज्ञान भारत में एक मजबूत अनुशासन के रूप में विकसित हुआ है। जिसमें बड़ी संख्या में शिक्षण, अनुसंधान और अनुप्रयोग केंद्र हैं।
- उत्कल विश्वविद्यालय भुवनेश्वर और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में UGC द्वारा समर्थित मनोविज्ञान में उत्कृष्टता के दो केंद्र हैं। लगभग 70 विश्वविद्यालय मनोविज्ञान में पाठ्यक्रम संचालित करते हैं।
- 1986 में प्रकाशित अपनी पुस्तक साइकोलॉजी इन ए थर्ड वर्ल्ड कंट्रीः द इंडियन एक्सपीरियंस में दुर्गानंद सिन्हा ने चार चरणों में भारत में एक सामाजिक विज्ञान के रूप में आधुनिक मनोविज्ञान के इतिहास की खोज की है ।
- उनके अनुसार, स्वतंत्रता तक का पहला चरण प्रायोगिक, मनो–विश्लेषणात्मक और मनोवैज्ञानिक परीक्षण अनुसंधान पर जोर देने वाला चरण था, जो मुख्य रूप से पश्चिमी देशों में अनुशासन के विकास को दर्शाता है।
- 1960 के दशक तक दूसरा चरण भारत में मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं में मनोविज्ञान के विस्तार का चरण था। इस चरण के दौरान भारतीय मनोवैज्ञानिकों ने पाश्चात्य मनोविज्ञान को भारतीय सन्दर्भ से जोड़ने का प्रयास करके एक भारतीय पहचान बनाने की दिशा में एक कदम उठाया ।
- ऐसा उन्होंने भारतीय स्थिति को समझने के लिए पाश्चात्य विचारों का उपयोग करके किया। हालाँकि, भारत में मनोविज्ञान ने 1960 के बाद के समस्या–उन्मुख अनुसंधान के चरण में भारतीय समाज के लिए प्रासंगिक बनने की मांग की।
- मनोवैज्ञानिक भारतीय समाज की समस्याओं के समाधान पर अधिक केंद्रित हो गए। इसके अलावा, हमारे सामाजिक संदर्भ के लिए पाश्चात्य मनोविज्ञान पर अत्यधिक निर्भरता की सीमाओं को भी महसूस किया गया।
- प्रमुख मनोवैज्ञानिकों ने अनुसंधान के महत्व पर जोर दिया, जो हमारी स्थिति के लिए प्रासंगिक है।
- भारत में मनोविज्ञान की एक नई पहचान की खोज ने स्वदेशीकरण के चरण को जन्म दिया, जो 1970 के दशक के अंत में शुरू हुआ।
- पश्चिमी ढांचे को खारिज करने के अलावा, भारतीय मनोवैज्ञानिकों ने एक ढांचे के आधार पर समझ विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया, जो सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से प्रासंगिक था।
- यह प्रवृत्ति पारंपरिक भारतीय मनोविज्ञान पर आधारित मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के कुछ प्रयासों में भी परिलक्षित हुई, जो हमारे प्राचीन ग्रंथों और धर्मग्रंथों से प्राप्त हुई थी।
- इस प्रकार, यह चरण स्वदेशी मनोविज्ञान में विकास की विशेषता है, जो भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ से उत्पन्न हुयी और भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली पर आधारित समाज और भारतीय मनोविज्ञान के लिए प्रासंगिक बनी ।
- जब से यह विकास जारी हुआ हैं, भारत में मनोविज्ञान दुनिया में मनोविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।
- यह मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को विकसित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए अधिक प्रासंगिक हो गया है, जो हमारे अपने सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में निहित हैं।साथ ही, हम यह भी पाते हैं कि न्यूरोबायोलॉजिकल और स्वास्थ्य विज्ञान के साथ इंटरफेस से जुड़े नए शोध अध्ययन किए जा रहे हैं।
- भारत में मनोविज्ञान अब विविध व्यावसायिक क्षेत्रों में लागू किया जा रहा है।
- यह मनोवैज्ञानिक न केवल विशेष समस्याओं वाले बच्चों के साथ काम कर रहे हैं, बल्कि वे अस्पतालों में नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के रूप में, मानव संसाधन विकास और विज्ञापन विभागों में कॉर्पोरेट संगठनों के रूप में, खेल निदेशालयों में, विकास क्षेत्र में और आईटी उद्योगों में भी कार्यरत हैं।

6. मनोविज्ञान और दैनिक जीवन (Psychology And Everyday Life)

- मनोविज्ञान न केवल एक ऐसा विषय है जो मानव स्वभाव के बारे में हमारे मन की कुछ जिज्ञासाओं को संतुष्ट करता है, बल्कि यह एक ऐसा विषय भी है जो विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकता है। ये विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत (उदाहरण के लिए, एक बेटी को एक शराबी पिता या एक समस्या वाले बच्चे से निपटने वाली माँ) समस्यायों का सामना करना, जो परिवार के ढांचे के भीतर निहित हो सकते हैं (उदाहरण के लिए, परिवार के सदस्यों के बीच संचार और बातचीत की कमी) हो सकते है या एक बड़े समूह या सामुदायिक व्यवस्था में (उदाहरण के लिए, आतंकवादी समूह या सामाजिक रूप से अलग–थलग समुदाय) राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय आयाम हो सकते हैं।

- शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, सामाजिक न्याय, महिला विकास, अंतरसमूह संबंध आदि से जुड़ी समस्याएं व्यापक हैं। जबकि इन समस्याओं के समाधान में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक सुधार शामिल हो सकते हैं, बदलाव के लिए व्यक्तिगत स्तर पर हस्तक्षेप की भी आवश्यकता होती है।
- इनमें से कई समस्याएं काफी हद तक मनोवैज्ञानिक प्रकृति की हैं और वे हमारी अस्वास्थ्यकर सोच, लोगों और स्वयं के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण और व्यवहार के अवांछित पैटर्न का परिणाम हैं।
- इन समस्याओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण इन समस्याओं को गहराई से समझने और उनके प्रभावी समाधान खोजने दोनों में मदद करता है।
- जीवन की समस्याओं को हल करने में मनोविज्ञान की क्षमता अधिक से अधिक महसूस की जा रही है। मीडिया ने इस संबंध में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- आपने टेलीविजन पर काउंसलर और थेरेपिस्ट को बच्चों, किशोरों, वयस्कों और बुजुर्गों से जुड़ी कई तरह की समस्याओं के समाधान के बारे में सुझाव देते हुए देखा होगा।
- लोगों को जीवन की बेहतर गुणवत्ता प्रदान करने के लिए कई मनोवैज्ञानिक अब हस्तक्षेप कार्यक्रमों को डिजाइन करने और क्रियान्वित करने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। इसलिए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हम मनोवैज्ञानिकों को विविध परिवेशों जैसे स्कूलों, अस्पतालों, उद्योगों, जेलों, व्यापारिक संगठनों, सैन्य प्रतिष्ठानों और निजी प्रैक्टिस में परामर्शदाताओं के रूप में काम करते हुए पाते हैं, जो लोगों को उनकी संबंधित स्थितियों में समस्याओं को हल करने में मदद करते हैं।
- दूसरों को समाज सेवा प्रदान करने में मदद करने के अलावा, मनोविज्ञान का ज्ञान आपके दैनिक जीवन में भी आपके लिए व्यक्तिगत रूप से प्रासंगिक है।
- मनोविज्ञान के सिद्धांत और तरीके जो आप इस पाठ्यक्रम में सीखेंगे उन्हें विश्लेषण करने और दूसरों के संबंध में स्वयं को समझने में उपयोग किया जाना चाहिए। ऐसा नहीं है कि हम अपने बारे में नहीं सोचते। लेकिन बहुत बार, हममें से कुछ लोग अपने बारे में बहुत अधिक सोचते हैं और कोई भी प्रतिक्रिया जो हमारे बारे में हमारी राय का खंडन करती है, उसे अस्वीकार कर दिया जाता है क्योंकि हम रक्षात्मक व्यवहार करने वाले कहलाते हैं।
- संरचनावाद आपके सीखने और स्मृति में सुधार के लिए अध्ययन की अच्छी आदतों को विकसित करने और उचित निर्णय लेने की रणनीतियों का उपयोग करके आपकी व्यक्तिगत और पारस्परिक समस्याओं को हल करने के लिए सकारात्मक तरीके से मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग करता है।
- परीक्षा के तनाव को कम करने या समाप्त करने के लिए भी आप इसे उपयोगी पाएंगे। इस प्रकार, मनोविज्ञान का ज्ञान हमारे दैनिक जीवन में अत्यधिक उपयोगी है, और व्यक्तिगत के साथ–साथ सामाजिक दृष्टिकोण से भी फायदेमंद है।

दैनिक जीवन के कुछ क्षेत्र जहाँ मनोविज्ञान की समझ को व्यवहार में लाया जा सकता है, वे निम्नलिखित हैं :–

- मनोविज्ञान परिवार, विवाह और कार्यक्षेत्र जैसी विभिन्न व्यक्तिगत समस्याओं को समझने में मदद करता है और समुदाय, समाज, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय आदि से संबंधित बड़ी समस्याओं से निपटने में भी मदद करता है।
- मनोविज्ञान व्यक्ति को दैनिक चुनौतियों से निपटने और व्यक्तिगत अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रतिक्रियावादी हुए बिना खुद को संतुलित और सकारात्मक तरीके से समझने में सक्षम बनाता है।
- यह बच्चों, किशोरों, वयस्कों और बुजुर्गों से संबंधित विभिन्न समस्याओं के समाधान भी सुझाता है।
- यह सामाजिक परिवर्तन और विकास, जनसंख्या, गरीबी, पारस्परिक या अंतर–समूह हिंसा और पर्यावरणीय निम्नीकरण से संबंधित महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण करने में भी मदद करता है।
- मनोवैज्ञानिक सिद्धांत आपके सीखने और स्मृति में सुधार के लिए उचित निर्णय लेने की रणनीतियों का उपयोग करके व आपकी व्यक्तिगत और पारस्परिक समस्याओं को हल करने के लिए अध्ययन की अच्छी आदतों को विकसित करने में मदद करते हैं।

7. शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational Psychology)

शैक्षिक मनोविज्ञान का अर्थ Meaning of Educational Psychology

- शिक्षा–मनोविज्ञान दो शब्दों के योग से बना हैं,'' शिक्षा् मनोविज्ञान। अतः शिक्षा मनोविज्ञान का शाब्दिक अर्थ है,'' शिक्षा संबंधी मनोविज्ञान।''
- सामान्य मनोविज्ञान एक शुद्ध विज्ञान है, जबकि शैक्षिक मनोविज्ञान मनुष्य के सामाजीकरण और उसके व्यवहार को संशोधित करने के उद्देश्य से शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग किया जाता है।
- मनोवैज्ञानिकों ने समय–समय पर शैक्षिक मनोविज्ञान को अपने तरीके से परिभाषित करने का प्रयास किया है। कुछ परिभाषाएँ नीचे दी गई हैं: –
  - **स्किनर के अनुसार,''** शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत शिक्षा से संबंधित संपूर्ण व्यवहार तथा व्यक्तित्व आ जाता हैं।
  - **क्रो एवं क्रो के अनुसार,''** शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों का वर्णन तथा व्याख्या करता हैं।'' जुड के अनुसार, ''शिक्षा मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो विकास की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते हुए व्यक्ति में होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या करता है।''
  - **ई.ए. पील के शब्दों में,** ''शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के विकास, उनकी क्षमताओं की सीमा और स्तर, वे प्रक्रिया जिसके द्वारा वे सीखते हैं और उनके सामाजिक संबंधों को समझने में मदद करते हैं।''

- **स्टीफन के अनुसार,''** शिक्षा मनोविज्ञान बालक के शैक्षिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन हैं।

- शैक्षिक मनोविज्ञान लागू मनोविज्ञान की शाखाओं में से एक है जो सिद्धांतों, तकनीकों और मनोविज्ञान के अन्य संसाधनों के अनुप्रयोग से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षक के सामने बच्चों के विकास को परिभाषित उद्देश्यों की ओर निर्देशित करने का प्रयास करता है।
- विशेष रूप से हम कह सकते हैं कि शैक्षिक मनोविज्ञान निम्न बिन्दुओं की समझ से संबंधित है:–
  - **बच्चा** – उसका विकास, उसकी आवश्यकता और उसकी क्षमताएँ
  - **सीखने की स्थिति**– जिसमें समूह की गतिशीलता और सीखने पर इसका प्रभाव शामिल है
  - **सीखने की प्रक्रिया**–इसकी प्रकृति और इसे प्रभावी बनाने के तरीके।
- अन्य शब्दों में कहा जाए तो शैक्षिक मनोविज्ञान का केंद्रीय विषय सीखने का मनोविज्ञान है।

8. शैक्षिक मनोविज्ञान की प्रकृति (Nature of Educational Psychology)

- इसकी प्रकृति वैज्ञानिक है क्योंकि यह स्वीकार किया गया है कि यह शिक्षा का विज्ञान है।
- हम निम्नलिखित तरीकों से शैक्षिक मनोविज्ञान की प्रकृति को संक्षेप में प्रस्तुत कर सकते हैं:
  - **शैक्षिक मनोविज्ञान एक विज्ञान है:** (विज्ञान तथ्यों के अवलोकन और सत्यापन योग्य सामान्य नियमों की स्थापना से संबंधित अध्ययन की एक शाखा है। विज्ञान डेटा संग्रह के लिए कुछ वस्तुनिष्ठ तरीकों को नियोजित करता है। इसका उद्देश्य तथ्यों को समझने, समझाने, भविष्यवाणी करने और नियंत्रित करने से है) किसी भी अन्य विज्ञान की तरह, शैक्षिक मनोविज्ञान ने भी डेटा संग्रह के उद्देश्यपूर्ण तरीके विकसित किए हैं। इसका उद्देश्य मानव व्यवहार को समझना, भविष्यवाणी करना और नियंत्रित करना भी है।
  - **शैक्षिक मनोविज्ञान एक प्राकृतिक विज्ञान है:** एक शैक्षिक मनोवैज्ञानिक जांच करता है, अपने डेटा को एकत्र करता है, उसे ठीक उसी तरह अपने निष्कर्ष पर पहुंचता है जैसे एक भौतिक विज्ञानी या जीवविज्ञानी पहुँचता है ।
  - **शैक्षिक मनोविज्ञान एक सामाजिक विज्ञान है:** समाजशास्त्री, मानवविज्ञानी, अर्थशास्त्री या राजनीतिक वैज्ञानिक की तरह, शैक्षिक मनोवैज्ञानिक भी मनुष्य और उनकी सामाजिकता का अध्ययन करता है।
  - **शैक्षिक मनोविज्ञान एक सकारात्मक विज्ञान है:** यह तर्कशास्त्र या नैतिकता जैसे सामान्य विज्ञान तथ्यों से संबंधित हैं । एक सकारात्मक विज्ञान तथ्यों के साथ वैसा व्यवहार करता है जैसे वे हैं तथा काम करते हैं। शैक्षिक मनोविज्ञान बच्चे के व्यवहार का अध्ययन करता है जैसा वह है, न कि जैसा उसे होना चाहिए। अर्थात कहा जा सकता है की यह एक सकारात्मक विज्ञान है।
  - **शैक्षिक मनोविज्ञान एक अनुप्रयुक्त विज्ञान है:** यह शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का अनुप्रयोग है। मनोविज्ञान के सिद्धांतों और तकनीकों को लागू करके यह विद्यार्थियों के व्यवहार और अनुभवों का अध्ययन करने की कोशिश करता है। मनोविज्ञान की एक शाखा के रूप में यह किसी भी अन्य अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान के समानान्तर है। उदाहरण के लिए, शैक्षिक मनोविज्ञान विकासात्मक मनोविज्ञान, नैदानिक मनोविज्ञान, असामान्य मनोविज्ञान और सामाजिक मनोविज्ञान जैसे क्षेत्रों से बहुत अधिक आकर्षित होता है।
  - **शैक्षिक मनोविज्ञान एक विकासशील या बढ़ता हुआ विज्ञान है: यह** हमेशा नए शोध से संबंधित है। जैसे–जैसे शोध निष्कर्ष जमा होते हैं, शैक्षिक मनोवैज्ञानिकों को बच्चे की प्रकृति और व्यवहार के बारे में बेहतर जानकारी प्राप्त होती है।
- इस प्रकार, शैक्षिक मनोविज्ञान एक व्यावहारिक, सकारात्मक, सामाजिक, विशिष्ट और व्यावहारिक विज्ञान है। जबकि सामान्य विज्ञान विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्तियों के व्यवहार से संबंधित है, शैक्षिक मनोविज्ञान केवल शैक्षिक क्षेत्र में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है।

9- शैक्षिक मनोविज्ञान का दायरा (Scope of Educational Psychology)

- शैक्षिक मनोविज्ञान के पांच प्रमुख क्षेत्र निम्न प्रकार हैं:
  - शिक्षार्थी
  - सीखने की प्रक्रिया
  - सीखने की स्थिति
  - शिक्षण प्रदर्शन अर्थात सीखने के प्रदर्शन का मूल्यांकन। ।
  - शिक्षक

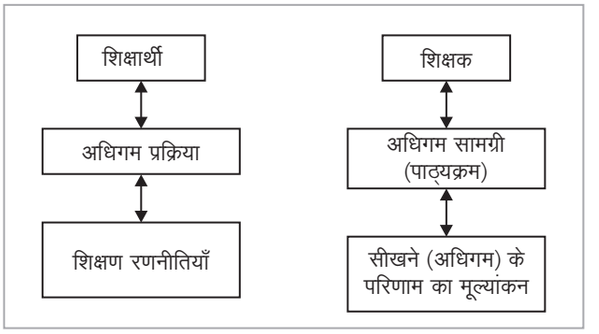

शैक्षिक मनोविज्ञान के पांच हितधारक

- शिक्षार्थी शैक्षिक मनोविज्ञान हमें शिक्षार्थी को जानने की आवश्यकता से परिचित कराता है और उसे भली–भांति जानने की तकनीकों से संबंधित है।
- इसमें शामिल विषयों के अध्ययन के अंतर्गत व्यक्ति की जन्मजात क्षमताओं व प्रवृतियों का मापन , प्रत्यक्ष, व परिवर्तित, सचेत व अचेतन

व्यवहार का मापन, बचपन से शुरू होने वाले प्रत्येक चरण में उसकी वृद्धि और विकास की विशेषताएं आदि का मापन शामिल है ।

सीखने की प्रक्रिया: The Learning Process

- सीखने वाले को जानने और यह तय करने के बाद कि कौन से सीखने के अनुभव प्रदान किए जाने चाहिए, ऐसी उभरती हुई समस्या शिक्षार्थी को सीखने के अनुभवों को आसानी और आत्मविश्वास से प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है।
- अर्थात यह सीखने की प्रकृति से संबंधित है। इसमें सीखने के नियम व सिद्धांत में याद रखना, भूलना, अनुभव करना, अवधारणा निर्माण, सोच, तर्क प्रक्रिया, समस्या समाधान, प्रशिक्षण का हस्तांतरण, प्रभावी सीखने के तरीके और साधन आदि विषय शामिल हैं।

सीखने की स्थिति: Learning Situation

- यह पर्यावरण के कारकों और सीखने की स्थिति से भी संबंधित है जो शिक्षार्थी और शिक्षक के बीच में आते हैं।
- यह कक्षा के माहौल और समूह की गतिशीलता तकनीक और सहायता जैसे विषय जो सीखने, मूल्यांकन तकनीकों औरव्यवहार , मार्गदर्शन और परामर्श आदि की सुविधा प्रदान करते हैंद्य यह शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया के सुचारू संचालन में मदद करते हैं।

शिक्षण स्थिति: Teaching Situation

- यह शिक्षण की तकनीकों का सुझाव देता है।
- ये,यह तय करने में भी मदद करता है कि शिक्षक को शिक्षार्थी को उसकी मानसिक और शारीरिक उम्र, उसके पिछले ज्ञान और रुचि के स्तर के अनुसार सीखने की कौन सी स्थिति प्रदान करनी चाहिए।
- इसके अंतर्गत शिक्षार्थी की विशेषताओं का वर्णन करके, विशेष विषय के लिए कौन सी शिक्षण सहायक सामग्री उपयुक्त है, यह तय किया जा सकता है।

सीखने के प्रदर्शन का मूल्यांकन: Evaluation of Learning Performance

- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास है। इसमें व्यक्तित्व के संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोगत्यात्मक पहलू शामिल हैं।
- शैक्षिक मनोविज्ञान मूल्यांकन और मापन के लिए विभिन्न उपकरणों और तकनीकों का सुझाव देता है जैसे – प्रदर्शन परीक्षण, मौखिक परीक्षण और लिखित परीक्षा।
- यह केवल मापन तक ही नहीं रुकता है। जबकि इमसे परीक्षण के बाद, परीक्षण के परिणामों का विश्लेषण किया जाता है तथा खराब प्रदर्शन के कारण, विकास के किसी भी पहलू में पिछड़ेपन को अध्ययन की आदतों, परीक्षा तकनीकों और सीखने की शैलियों में मार्गदर्शन और परामर्श द्वारा ठीक किया जाता है।
- इनका विश्लेषण कर शिक्षार्थी की सहायता की जाती है ताकि वह कठिनाइयों को दूर कर सके।

शिक्षक: The Teacher

- शैक्षिक मनोविज्ञान एक शिक्षक के लिए शिक्षा की प्रक्रिया में अपनी भूमिका को ठीक से निभाने के लिए स्वयं को जानने की आवश्यकता पर बल देता है।
- यह आवश्यक व्यक्तित्व लक्षणों, रुचियों, योग्यताओं, प्रभावी शिक्षण की विशेषताओं आदि पर प्रकाश डालता है, ताकि शिक्षकों को उनके स्वयं के व्यक्तित्व में अंतर्दृष्टि प्रदान करके तनाव, संघर्ष और चिंता से निपटने में मदद मिल सके।
- इस क्षेत्र में निरंतर शोध के कारण शैक्षिक मनोविज्ञान का दायरा लगातार बढ़ रहा है। निम्नलिखित कारक शैक्षिक मनोविज्ञान के दायरे को इंगित करते हैं: –
  - **मानव व्यवहार: Human Behaviour**
    - यह शैक्षिक संदर्भ में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। मनोविज्ञान व्यवहार का अध्ययन है और शिक्षा का उद्देश्य व्यवहार में संशोधन करना है। इसलिए शैक्षिक मनोविज्ञान का प्रभाव शिक्षा के सभी पहलुओं में परिलक्षित होना चाहिए।
  - **वृद्धि और विकास: Growth and development**
    - यह वृद्धि और विकास को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों का अध्ययन करता है।
    - अध्ययन द्वारा प्रदान की गई अंतर्दृष्टि शिक्षा के शिक्षार्थी उन्मुख कार्यक्रमों की वैज्ञानिक रूप से योजना बनाने और क्रियान्वित करने में मदद करती है ।
  - **शिक्षार्थी: The Learner**
    - शैक्षिक मनोविज्ञान की विषय–वस्तु शिक्षार्थी के इर्द–गिर्द बुनी गई है। इसलिए, शिक्षार्थी को जानने की आवश्यकता और उसे अच्छी तरह जानने की तकनीक विषयों में व्यक्तियों की जन्मजात क्षमताएं और प्रवृतियाँ, व्यक्तिगत अंतर, शिक्षार्थी का प्रत्यक्ष, व अप्रत्यक्ष ,चेतन व अचेतन व्यवहार, उसकी वृद्धि और विकास की विशेषताएं और बचपन से वयस्कता तक प्रत्येक चरण आदि शामिल हैं।
  - **सीखने के अनुभव: The Learning Experiences**
    - शैक्षिक मनोविज्ञान यह तय करने में मदद करता है कि शिक्षार्थी की वृद्धि और विकास के किस स्तर पर सीखने के कौन से अनुभव वांछनीय हैं, जिससे इन अनुभवों को अधिक आसानी और संतुष्टि के साथ प्राप्त किया जा सके।
  - **सीखने की प्रक्रिया: Learning process**
    - शिक्षार्थी को जानने और यह तय करने के बाद कि कौन से सीखने के अनुभव प्रदान किए जाने हैं, शैक्षिक मनोविज्ञान सीखने के नियमों, और सिद्धांतों की ओर बढ़ता है।
    - सीखने की प्रक्रिया में अन्य आवश्यक तत्व स्मृति, विस्मृति , अनुभव करना, अवधारणा निर्माण, सोच और तर्क, समस्या समाधान, सीखने का हस्तांतरण, प्रभावी सीखने के तरीके और साधन आदि हैं।

- **सीखने की स्थिति या पर्यावरण: Learning Situation or Environment**
  - यहां हम उन पर्यावरणीय कारकों और सीखने की स्थितियों से निपटते हैं जो शिक्षार्थी और शिक्षक के बीच में आते हैं।
  - शिक्षण–सीखने की प्रक्रिया के सुचारू संचालन के लिए कक्षा का माहौल समूह की गतिशीलता, सीखने और मूल्यांकन, तकनीकों व प्रथाओं, मार्गदर्शन और परामर्श आदि की सुविधा देने जैसे विषयों को ग्रहण करने वाली तकनीक और सहायक प्रदान करता है ।
- **व्यक्तिगत मतभेद: Individual differences**
  - यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है।
  - यह विचार शैक्षिक मनोविज्ञान द्वारा ही प्रकाश में लाया गया है।
- **व्यक्तित्व और समायोजन: Personality and adjustment**
  - शिक्षा को व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के रूप में परिभाषित किया गया है।
  - यदि शिक्षा को किसी कार्य को पूरा करना है तो सभी निर्देशात्मक कार्यक्रम व्यक्तित्व की प्रकृति और विकास को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों पर आधारित होने चाहिए।
- **शिक्षक: The Teacher**
  - शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया की किसी भी योजना में शिक्षक एक प्रभावी शक्ति है। इसमें शिक्षक की भूमिका पर चर्चा की गई है।
  - यह एक शिक्षक के लिए शिक्षा की प्रक्रिया में उनके संघर्ष, प्रेरणा, चिंता, समायोजन, आकांक्षा का स्तर आदि के द्वारा अपनी भूमिका ठीक से निभाने के लिए 'स्वयं को जानने' की आवश्यकता पर बल देता है
  - यह आवश्यक व्यक्तित्व लक्षणों, रुचियों, योग्यताओं, प्रभावी शिक्षण की विशेषताओं आदि पर प्रकाश डालता है ताकि उन्हें एक सफल शिक्षक बनने के लिए प्रेरित किया जा सके।
- **मार्गदर्शन और परामश: Guidance and Counselling**
  - शिक्षा और कुछ नहीं बल्कि बच्चे के समुचित विकास के लिए आवश्यक मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान करना है।
  - यह सच है, की विशेष रूप से अत्यंत जटिल और समस्याग्रस्त स्थिति के आलोक में इसका सामना बढ़ती दुनिया में तेजी से करना पड़ रहा है।
  - प्रभावी मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान करने के लिए सहायक सिद्धांतों और व्यावहारिक उपायों को विकसित करके शैक्षिक मनोविज्ञान बचाव में आया है।
  - हम यह कहकर निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सामान्य मनोविज्ञान की तुलना में शैक्षिक मनोविज्ञान का दायरा संकुचित है।
  - जबकि सामान्य मनोविज्ञान सामान्य रूप से व्यक्ति के व्यवहार से संबंधित है, शैक्षिक मनोविज्ञान का संबंध शैक्षिक व्यवस्था में शिक्षार्थी के व्यवहार से है।

10. शिक्षकों, शिक्षार्थियों, शिक्षण और अधिगम के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान की प्रासंगिकता (Relevance of Educational Psychology To Teachers] Learners] Teaching And Learning)

- आधुनिक शिक्षा प्रणाली के निर्माण में शैक्षिक मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान है।
- शैक्षिक मनोविज्ञान का ज्ञान शिक्षक की निम्नलिखित प्रकार से सहायता करता है:–
  - **विकास के चरणों को समझने के लिए: To understand the Stages of Development**
    - मनोविज्ञान ने स्पष्ट रूप से दिखाया है कि मानव जीवन वयस्कता तक पहुँचने से पहले विकास के विभिन्न चरणों से गुजरता है। वे शैशवावस्था, बचपन, किशोरावस्था और वयस्कता हैं।
    - मनोवैज्ञानिकों ने जीवन की इन विभिन्न अवधियों में विशिष्ट व्यवहार प्रतिमानों का भी गहन अध्ययन किया है।
    - शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास के संबंध में विशेषताओं के विभिन्न सेटों के साथ इन अवधियों की पहचान से शिक्षाविदों को पाठ्यक्रम को डिजाइन करने और विभिन्न चरणों में छात्रों के लिए शिक्षण के उपयुक्त तरीकों का निर्धारण करने में बहुत मदद मिलती है।
  - **शिक्षार्थी को जानने के लिए: To Know the Learner**
    - सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बच्चा या शिक्षार्थी प्रमुख कारक होते है।
    - शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षक को उसकी रुचियों, दृष्टिकोणों, योग्यताओं और अन्य अधिग्रहीत या जन्मजात क्षमताओं और आवश्यकताओं को जानने में मदद करता है। इसके अंतर्गत उसकी सामाजिक, भावनात्मक, बौद्धिक, शारीरिक और सौन्दर्य संबंधी आवश्यकताओं से जुड़े विकास के चरण को जानने के लिए। उसकी आकांक्षा के स्तर, उसके चेतन और अचेतन व्यवहार को जानने के लिए। उसका प्रेरक और समूह व्यवहार। उसके संघर्ष, इच्छाएँ और उसके मानसिक स्वास्थ्य के अन्य पहलू आदि को शामिल किया गया है ताकि सही मार्गदर्शन और सहायता प्रदान की जा सके और शिक्षार्थी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बन सके।
  - **कक्षा में सीखने की प्रकृति को समझने के लिए: To Understand the Nature of Classroom Learning**
    - शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षक को शिक्षार्थियों के स्तर के अनुसार अपने शिक्षण को अनुकूलित और समायोजित करने में मदद करता है।

- एक शिक्षक एक कक्षा में पढ़ा रहा है लेकिन बड़ी संख्या में छात्र उस विषय–वस्तु को नहीं समझ पाते हैं जो पढ़ाया जा रहा है।
- कक्षा में छात्रों के साथ प्रभावी ढंग से व्यवहार करने के लिए शिक्षक को सीखने की प्रक्रिया के विभिन्न दृष्टिकोणों, सिद्धांतों, नियमों और इसे प्रभावित करने वाले कारकों का ज्ञान होना चाहिए तभी वह सीखने की स्थिति में उपचारात्मक उपायों को लागू कर सकता है।

- **व्यक्तिगत अंतर को समझने के लिए: To Understand the Individual Differences**
  - कोई भी दो व्यक्ति बिल्कुल एक जैसे नहीं होते। विद्यार्थियों में बुद्धि के स्तर, अभिरुचि, पसंद–नापसंद और अन्य प्रवृत्तियों और क्षमताओं में भिन्नता होती है।
  - इसमें प्रतिभाशाली, पिछड़े, शारीरिक और मानसिक रूप से अक्षम बच्चे आदि शामिल हैं।
  - इस प्रकार, मनोविज्ञान शिक्षक को कक्षा में छात्रों के बीच व्यक्तिगत अंतर और उनके लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया, कार्यप्रणाली और तकनीकों के बारे में बताता है।
- **कक्षा की समस्याओं को हल करने के लिए: To Solve Classroom Problems**
  - स्कूल से भागना, डराना–धमकाना, साथियों का दबाव, जातीय तनाव, परीक्षा में नकल आदि जैसी अनगिनत समस्याएं हैं।
  - शैक्षिक मनोविज्ञान समस्यात्मक बच्चों की विशेषताओं, समूह की गतिशीलता, व्यवहार संबंधी विशेषताओं और समायोजन का अध्ययन करके शिक्षक को सुसज्जित करने में मदद करता है।
- **शिक्षण में आवश्यक कौशल और रुचि विकसित करना: To develop Necessary Skills and Interest in Teaching**
  - शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षक को विद्यार्थियों द्वारा उत्पन्न समस्याओं से निपटने, कक्षा में एक स्वस्थ वातावरण बनाए रखने और बच्चे की प्रगति के बारे में चिंता दिखाने के लिए आवश्यक गुण और कौशल प्राप्त करने और विकसित करने में मदद करता है।
- **शिक्षण के प्रभावी तरीकों को समझने के लिए: To Understand Effective Methods of Teaching**
  - शैक्षिक मनोविज्ञान ने शिक्षण के कई नए दृष्टिकोणों, सिद्धांतों, विधियों और तकनीकों की खोज की है जो आज की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बहुत सहायक हैं।
  - शैक्षिक मनोविज्ञान हमें बताता है कि बच्चों के लिए खेल और मनोरंजन कितना महत्वपूर्ण है और कैसे खेल–पद्धति सीखने को एक दिलचस्प कार्य में बदल देती है।
- **बच्चे पर आनुवंशिकता और पर्यावरण के प्रभाव को समझने के लिए: To Understand the Influence of Heredity and Environment on the Child**
  - शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षक को यह जानने में मदद करता है कि बच्चा आनुवंशिकता और पर्यावरण का उत्पाद है। आनुवंशिकता और पर्यावरण एक सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों बच्चे के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
  - बच्चा कई वंशानुगत गुणों के साथ पैदा होता है, पर्यावरण उन्हें समाज की आवश्यकताओं के अनुसार संशोधित करने में मदद करता है।
- **बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य को समझना: To Understand the Mental Health of the Child**
  - शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षक को यह जानने में मदद करता है कि एक छात्र के मानसिक अस्वस्थता और कुसमायोजन के लिए कौन से कारक जिम्मेदार हैं और उसमें सुधार का सुझाव देते हैं।
  - इसके अलावा, यह शिक्षक को किसी स्थिति से निपटने के लिए अपनी मानसिक स्थिति में सुधार करने के लिए आवश्यक अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।
- **पाठ्यचर्या निर्माण की प्रक्रिया को समझने के लिए: To Understand the Procedure of Curriculum Construction**
  - **पाठ्यचर्या शिक्षण**–अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। पाठ्यचर्या बाल–केंद्रित होना चाहिए और व्यक्ति के उद्देश्यों और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए क्योंकि बच्चे की क्षमताएं अलग–अलग चरणों में भिन्न होती हैं।
  - शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षक को बच्चों के लिए एक ठोस और संतुलित पाठ्यचर्या तैयार करने के लिए पाठ्यचर्या निर्माताओं को तरीके और साधन सुझाने में मदद करता है।
- **मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान करना: To Provide Guidance and Counselling**
  - आज जीवन के हर चरण में एक बच्चे के मार्गदर्शन की आवश्यकता है क्योंकि मनोवैज्ञानिक क्षमताएं, रुचियां और सीखने की शैली एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होती हैं।
  - इसी तरह, बच्चे को भविष्य में कौन से पाठ्यक्रम पढ़ने चाहिए, यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। इन सबका उत्तर अच्छे से दिया जा सकता है यदि शिक्षक बच्चों के मनोविज्ञान को जानता हो।
- **आकलन और मूल्यांकन के सिद्धांतों को समझने के लिए: To Understand Principles of Evaluation and Assessment**

- मूल्यांकन शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। बच्चे की क्षमता का परीक्षण कैसे किया जाए, यह मूल्यांकन तकनीकों पर निर्भर करता है।
- व्यक्ति के मूल्यांकन के लिए विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का विकास शैक्षिक मनोविज्ञान की एक विशिष्ट देन है।

❖ **सकारात्मक और रचनात्मक अनुशासन पैदा करना: To inculcate Positive and Creative Discipline**

- पारंपरिक शिक्षकों का नारा था ''छड़ी छोड़ो और बच्चे को बिगाड़ो।'' बच्चे को कोड़े मारना इस परंपरा का प्रमुख साधन था।
- शैक्षिक मनोविज्ञान ने दमनकारी प्रणाली को निवारक प्रणाली के साथ बदल दिया है। अब शिक्षक छात्रों के व्यवहार को संशोधित करने के लिए एक सहकारी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हैं।
- प्रभावी और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से आत्म–अनुशासन पर जोर दिया जाता है।

❖ **शैक्षिक मनोविज्ञान और अनुसंधान: Educational Psychology and Research**

- शैक्षिक मनोवैज्ञानिक शैक्षिक स्थिति में मानव के व्यवहार को सुधारने के लिए अनुसंधान करते हैं।
- इस उद्देश्य के लिए यह प्रदर्शन को मापने और उसके उपचारात्मक उपायों का सुझाव देने के लिए उपकरणों को विकसित करने में मदद करता है।

❖ **स्वयं को जानने के लिए: To Know Himself/Herself**

- शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षक को अपने बारे में जानने में मदद करता है।
- उसका अपना व्यवहार पैटर्न, व्यक्तित्व विशेषताएँ, पसंद और नापसंद, प्रेरणा, चिंता, संघर्ष, समायोजन आदि का ज्ञान उसे एक सफल शिक्षक के रूप में विकसित होने में मदद करता है।

❖ **शैक्षिक मनोविज्ञान व्यावसायिक विकास, बदलते दृष्टिकोण और नवीन सोच में मदद करता है: Educational Psychology Helps in Professional Growth] Changing Attitude and Innovative Thinking%**

- कक्षा के अंदर, शैक्षिक मनोविज्ञान ने शिक्षक को मानव जीवन पर कक्षा कार्यक्रमों को प्राप्त करने और निर्देशित करके विद्यार्थियों की उचित कंडीशनिंग प्राप्त करने में सक्षम बनाया है।
- इतना ही नहीं, शिक्षा मनोवैज्ञानिक शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार खोजने में लगे हुए हैं। इन नवाचारों से शिक्षक का पेशेवर विकास होगा।
- निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली के निर्माण में शैक्षिक मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षण में, हम तीन तत्वों से निपट रहे हैं – शिक्षक, छात्र और विषय। इसने शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, प्रशासकों, निरीक्षकों, मार्गदर्शन और परामर्श कार्यकर्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं को बच्चों के प्रति एक निष्पक्ष और सहानुभूतिपूर्ण रवैया विकसित करने और उन्हें एकीकृत व्यक्तित्व बनाने में मदद की है।

महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. बचपन में मनोसामाजिक विकास के सन्दर्भ में, सहकर्मी सम्बन्धों के सकारात्मक प्रभाव क्या हैं?

I. जैसे–जैसे बच्चे माता–पिता के प्रभाव से दूर होने लगते हैं, सहकर्मी समूह नए दृष्टिकोण खोलता है और उन्हें स्वतंत्र निर्णय लेने के लिए मुक्त करता है।

II. कुछ नस्लीय और जातीय समूहों के सदस्य के प्रति प्रतिकूल अभिवृत्ति को सुदृढ़ करने की प्रवृत्ति।

(A) केवल I (B) न ही I न ही II
(C) I तथा II दोनों (D) केवल II

2. निम्नलिखित में से क्या विकासशील व्यक्तियों पर भावनाओं का/के प्रभाव है/हैं?

I. भावनाएँ जीवन में रोजमर्रा के अनुभवों को आनंदित करती हैं।

II. भावनाएँ हमारे व्यवहार की प्रेरणाओं के रूप में कार्य करती हैं।

III. भावनात्मक अभाव से व्यक्तित्व में खराबी आती है।

(A) II तथा III दोनों (B) I तथा III दोनों
(C) I तथा II दोनों (D) I, II तथा III

3. निम्नलिखित में से किसने प्रस्तावित किया है कि लोगों ने अपने व्यवहार में महारत हासिल करने के लिए 'मनोवैज्ञानिक उपकरण भी बनाए हैं?'

(A) जीन पियाजे
(B) फ्रेडरिक एंगेल्स
(C) वायगोत्स्की
(D) अल्बर्ट बंडुरा

4. ..... मानव और सामाजिक सम्बन्धों के सुचारू संचालन के लिए अच्छी तरह से स्थापित, आसानी से मान्यता प्राप्त और अपेक्षाकृत स्थिर मानदंडों द्वारा विनियमित मानव व्यवहार के विभिन्न पहलुओं पर लागू मानदंडों का एक समूह है।

(A) निजी संस्था
(B) लोकतांत्रिक संस्था
(C) पूँजी संस्था
(D) सामाजिक संस्थाएँ

5. बच्चों का भाषा विकास.....से शुरू होता है।

(A) 2 वर्ष की आयु
(B) 1 वर्ष की आयु
(C) जन्म का रोना
(D) 5 वर्ष की आयु

6. निम्नलिखित में से कौन-सी क्षमताओं में से एक नहीं है जो एडवर्ड ग्लेसर के अनुसार महत्वपूर्ण सोच को रेखांकित करती है ?

(A) इकट्ठा और मार्शल प्रासंगिक जानकारी।
(B) अस्थिर धारणाओं और मूल्यों को अनदेखा करें।
(C) सबूतों का मूल्यांकन करें और बयानों का मूल्यांकन करें।
(D) समस्याओं को पहचानो।

7. कौन से मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों ने प्रकृति में अनिवार्य रूप से सामाजिक होना सीख लिया और सामाजिक परिवेश में बच्चों को शिक्षित करना उन्हें अच्छा भविष्य बनाने वाला नागरिक बनाता है ?

(A) ई.एल. थार्नडाइक (B) कार्ल रोजर्स
(C) बी.एफ. स्किनर (D) पाउलो फ्रेरे

8. निम्नलिखित में से उन महत्वपूर्ण कारकों में से एक नहीं है जिन्हें एक मनोवैज्ञानिक द्वारा पहचाना गया है जो रचनात्मकता को प्रभावित करते हैं ?
(A) रचनात्मक समस्या दृष्टिकोण
(B) रचनात्मक व्यक्ति दृष्टिकोण
(C) रचनात्मक उत्पाद दृष्टिकोण
(D) रचनात्मक प्रक्रिया दृष्टिकोण

9. मनोवैज्ञानिक कसौटी के अंतर्गत कौन-सा मापदंड नहीं है ?
(A) प्रेरणा
(B) स्तर
(C) साहित्यिक उपकरण
(D) चित्र/खाका

10. जानकारी 'दी गई और पूर्ण'_____ द्वारा स्वीकृत नहीं है।
(A) व्यवहारवाद (B) संज्ञात्मकवाद
(C) संरचनावाद (D) उपर्युक्त सभी

11. चरित्र का विकास होता है–
(A) इच्छा–शक्ति से
(B) आचरण और व्यवहार से
(C) नैतिकता से
(D) उपर्युक्त सभी

12. मनोविश्लेषण के जनक हैं–
(A) इरिक एच. इरिकसन
(B) जीन पियाजे
(C) जीरॉन एस. ब्रूनर
(D) सिग्मन्ड फ्रॉयड

13. निर्माणवादी विधि का उदाहरण क्या है?
(A) संज्ञा के उदाहरण देना और संज्ञा की परिभाषा देना और फिर से संज्ञा के उदाहरण देना
(B) संज्ञा की परिभाषा की व्याख्या करना और संज्ञा के उदाहरण देना और संज्ञा की परिभाषा को दोहराना
(C) एक समय में संज्ञा की परिभाषा और उदाहरण देना
(D) संज्ञा से संबंधित विभिन्न चीजों को दिखाना और छात्रों को संज्ञा की परिभाषा तैयार करने के लिए कहना

14. छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप कक्षा के लिए शिक्षण–शिक्षण गतिविधियों को डिजाइन करने के लिए, शिक्षकों को इसका ज्ञान होना चाहिए :
(A) व्यवहार मनोविज्ञान
(B) औद्योगिक मनोविज्ञान
(C) असामान्य मनोविज्ञान
(D) विकासात्मक मनोविज्ञान

15. अनुभूति की परिभाषा क्या है?
(A) हमारे विचारों, अनुभव और इंद्रियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने और समझने की प्रक्रिया
(B) जैविक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों की प्रक्रिया
(C) विकासशील और दृष्टिकोण रुचि
(D) संरचनात्मक और शारीरिक परिवर्तन

उत्तरमाला

1. (A)	**2.** (D)	**3.** (C)	**4.** (D)	**5.** (C)
6. (B)	**7.** (B)	**8.** (A)	**9.** (B)	**10.** (C)
11. (D)	**12.** (D)	**13.** (D)	**14.** (D)	**15.** (A)